

डॉ. जेम्स एस. स्पीगल, ईसाई नैतिकता, सत्र 4, सामाजिक अनुबंध सिद्धांत

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 4 है, सामाजिक अनुबंध सिद्धांत।

ठीक है, अब हम सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के बारे में बात करने जा रहे हैं।

जैसा कि मैंने उपयोगितावाद पर हमारी चर्चा के अंत में उल्लेख किया, उपयोगितावाद का एक ब्रांड नियम उपयोगितावाद है, जिसके अनुसार हम उन नियमों का पालन करने का प्रयास करते हैं, जिनका पालन करने पर, अधिकतम संख्या के लिए आनंद अधिकतम होगा। सामाजिक अनुबंध सिद्धांत का उद्देश्य उस विचार का पालन करना और कुछ ऐसे नियम प्रदान करना है जो हमें व्यक्तियों के साथ-साथ पूरे समाज का मार्गदर्शन करेंगे, और नैतिक दायित्व, साथ ही राजनीतिक अधिकारों की हमारी अवधारणाओं को इन मौलिक नियमों में आधारित करेंगे जिन्हें समाज का मार्गदर्शन करने के लिए चुना गया है। विचार यह है कि यदि हम एक समाज के रूप में इस बात पर किसी तरह के समझौते पर पहुँच सकते हैं कि समाज का मार्गदर्शन करने के लिए बुनियादी नियम क्या होंगे, तो इससे सबसे शांतिपूर्ण, सामंजस्यपूर्ण, उत्पादक, खुशहाल और संतुष्ट समाज बनेगा।

इसे सामाजिक अनुबंध सिद्धांत इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसका विचार यह है कि इसे प्राप्त करने के लिए आप समाज में नागरिकों के बीच किसी प्रकार का समझौता, एक औपचारिक समझौता करते हैं। इसलिए, यह कुछ ऐसी समस्याओं से बच जाएगा जो अधिनियम उपयोगितावाद को प्रभावित करती हैं, जैसे कि आवेदन की समस्या, अधिकारों की समस्या और न्याय की समस्या, कम से कम अगर सामाजिक अनुबंध सिद्धांत अन्य मामलों में सफल होता है। सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के कुछ प्रमुख समर्थकों में थॉमस हॉब्स, जॉन लॉक, जीन-जैक्स रूसो और जॉन रॉल्स शामिल हैं।

हम इनमें से तीन दार्शनिकों के बारे में बात करेंगे, सबसे पहले थॉमस हॉब्स से, जिन्होंने कहा कि डर और मैं जुड़वाँ बच्चे पैदा हुए थे क्योंकि उनकी माँ स्पेनिश आर्मडा के डूबने के दौरान उनसे गर्भवती थीं। यह 1588 की बात है। उसे नहीं पता था कि, क्या यह अंत होने वाला है।

जब उसने इस बारे में सुना तो हम सब यहाँ मरने वाले थे, और उसे प्रसव पीड़ा हुई और उसने थॉमस हॉब्स को जन्म दिया। लेकिन वह बिलकुल ठीक था। वह लड़का लगभग 90 साल तक जीवित रहा।

लेकिन उन्होंने यह पुस्तक लिखी, लेविथान, और यह उस पुस्तक का मुखपृष्ठ है, जो, अगर हम तलवार और त्रिशूल या जो कुछ भी है, पकड़े हुए उस चरित्र पर जूम इन करने में सक्षम थे, तो वह सैकड़ों या हज़ारों व्यक्तियों से बना है, जो एक सामाजिक अनुबंध के विचार के लिए एक अच्छी

छवि है जहाँ आप लोगों को सहमत होते हुए, एक साथ आते हुए और समाज का मार्गदर्शन करने के लिए कुछ बुनियादी सिद्धांतों पर सहमत होते हुए पाते हैं ताकि वे एक व्यक्ति की तरह काम कर सकें। हॉब्स का सामाजिक अनुबंध सिद्धांत शुरुआती आधुनिक सामाजिक अनुबंध सिद्धांतकारों में अद्वितीय है क्योंकि वह एक तरह की पूर्ण राजनीतिक संप्रभुता का बचाव करता है। अन्य सामाजिक अनुबंध सिद्धांतकार शासितों की सहमति और यहां तक कि विद्रोह के अधिकार पर भी जोर देते हैं।

यह हॉब्स का दृष्टिकोण नहीं है। वह क्रांति के अधिकार में विश्वास नहीं करता। लेकिन हम बाद में अन्य लोगों के बारे में बात करेंगे।

सबसे पहले हॉब्स के संबंध में, हॉब्स प्रकृति की इस स्थिति की अवधारणा से शुरू करते हैं, जहाँ मनुष्य किसी भी कानून द्वारा शासित नहीं होते हैं, जहाँ लोग प्रकृति से वही प्राप्त करते हैं जो वे चाहते हैं: भोजन, आश्रय जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है, और कपड़े जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है, और कोई शासन करने वाली सत्ता नहीं होती है। उस परिस्थिति में जीवन कैसा होगा, चाहे मानव इतिहास में कभी प्रकृति की वास्तविक स्थिति रही हो या नहीं? अगर कोई शासन करने वाली सत्ता न हो तो वह कैसा होगा? हॉब्स के अनुसार, यह युद्ध की स्थिति होगी। क्यों? क्योंकि आप और मैं, किसी न किसी समय, एक ही चीज़ चाहते हैं।

और सीमित संसाधनों के साथ, क्योंकि हमारे पास असीमित मात्रा में सामान नहीं है जिसे हम प्राप्त कर सकें, हम किसी न किसी समय प्रतिस्पर्धा में आ ही जाएंगे। और चूंकि मैं इसे बहुत चाहता हूँ, और आप इसे बहुत चाहते हैं, इसलिए किसी न किसी समय यह बात सामने आती है कि मैं इसके लिए आपसे लड़ूंगा। है न? और इससे युद्ध की स्थिति पैदा होती है।

और यह सिर्फ आप और मैं ही नहीं हैं। प्रकृति की इस स्थिति में सैकड़ों या हज़ारों अन्य लोग भी हैं। यह अराजकता होने जा रही है।

यह एक खूनी गड़बड़ होने जा रही है। और इसलिए, प्रकृति की ऐसी स्थिति में, हॉब्स ने प्रसिद्ध रूप से कहा, जीवन एकाकी, गरीब, बुरा, कूर और छोटा है। लेकिन कौन ऐसा चाहता है? कौन युद्ध और दुश्मनी की स्थिति में रहना चाहता है, जहाँ हम सभी डर में जी रहे हैं? हमें प्रकृति से वह पाने की ज़रूरत है जो हम चाहते हैं, लेकिन मैं इसके लिए लोगों से लड़ना नहीं चाहता।

यह तथ्य कि मनुष्य बुद्धि और शारीरिक शक्ति के मामले में लगभग बराबर हैं, यहाँ समस्या को और भी जटिल बना देता है। क्योंकि हम में से हर कोई सोचता है कि मैं उसे हरा सकता हूँ। मैं उसे हराने का कोई तरीका निकाल सकता हूँ।

और अगर हमें इस बात का पूरा भरोसा है कि हम उस प्रतिस्पर्धा में जीत सकते हैं, तो इससे संघर्ष की संभावना या संभावना और बढ़ जाती है। तो, इसे यहाँ इस तरह से व्यक्त करने के लिए, हमारे पास चीज़ों को पाने की उम्मीद या क्षमता की एक तरह की समानता है, जो समान चीज़ों की हमारी इच्छा के साथ संयुक्त है। यही वह चीज़ है जो प्रकृति की स्थिति में एक निश्चित शत्रुता और युद्ध की स्थिति को जन्म देती है।

तो, सवाल यह है कि हम इस समस्या से कैसे निपट सकते हैं? हम युद्ध की इस स्थिति से कैसे बच सकते हैं और इसके साथ आने वाले डर से कैसे लड़ सकते हैं? हम हमेशा डर में नहीं रहना चाहते। यहीं पर हॉब्स का प्रस्ताव है कि कुछ बुनियादी अधिकार और कानून हैं जो हम पर लागू होते हैं क्योंकि हम तर्कसंगत प्राणी हैं। उनका कहना है कि प्रकृति का सबसे मौलिक अधिकार आत्म-संरक्षण की स्वतंत्रता है।

मुझे अपना जीवन बचाने का अधिकार है। और मुझे अपने जीवन को बचाने के लिए जो भी शक्ति हो उसका उपयोग करने का अधिकार है। यह प्रकृति का एक बुनियादी अधिकार है, जीवन का एक बुनियादी अधिकार जिसे वह वहां स्वीकार कर रहा है।

और फिर वह यह भी कहते हैं कि प्रकृति का एक मौलिक कानून है जो जीवन के अधिकार, आत्मरक्षा की स्वतंत्रता से मेल खाता है। और वह जीवन को संरक्षित करने का कर्तव्य है, विनाश का एक बुनियादी निषेध है। अब, मुझे नहीं लगता कि वह प्रकृति के इस कानून और प्रकृति के इस अधिकार को पर्याप्त रूप से आधार नहीं देते हैं।

वह कहेंगे कि यह अंततः तर्कसंगत प्राणियों के रूप में हमारी क्षमता पर आधारित है। लेकिन मैं कुछ और जानना चाहता हूँ। वास्तव में इस बुनियादी अधिकार और इस कानून का आधार क्या है? यह कहाँ से आता है? इन चीज़ों के लिए हमारी सार्वभौमिक इच्छा और हमारी तर्कसंगत क्षमताओं का हवाला देना ही पर्याप्त नहीं है, लेकिन ऐसा हो सकता है।

यह उनका दावा है, और हमें प्रकृति के इस अधिकार का सम्मान करने और जीवन को संरक्षित करने के लिए प्रकृति के इस कानून का पालन करने का प्रयास करना चाहिए। इसलिए, उनका सुझाव है कि सभी लोग मिलकर अपने विशेष अधिकारों को किसी संप्रभु व्यक्ति या शायद कुछ लोगों को हस्तांतरित करें, लेकिन आमतौर पर, इसे एक सम्राट, एक राजा या एक रानी के रूप में दर्शाया जाता है। सुरक्षा के वादे और मेरी स्वतंत्रता के संरक्षण के बदले में इस राजनीतिक संप्रभु को अपने अधिकारों का आदान-प्रदान करना।

तो, मैं कुछ छोड़ता हूँ, और कुछ पाता हूँ। हम यहाँ एक सौदा कर रहे हैं। यह एक अनुबंध है।

यह एक समझौता है। यह एक समझौता है जिस पर हम हस्ताक्षर करने जा रहे हैं। और हमें किसी ऐसे व्यक्ति को चुनना होगा जो बहुत भरोसेमंद हो।

कोई ऐसा व्यक्ति जो विश्वसनीय हो और जिसका चरित्र ऐसा हो कि आप भरोसा कर सकें कि वह इस संप्रभु शक्ति का दुरुपयोग नहीं करेगा। लेकिन हम जो करेंगे वह यह है कि हम अपने कई विशेष अधिकारों को इस वादे के बदले में छोड़ देंगे कि हमें सुरक्षा दी जाएगी। भले ही हम अपनी पूर्ण स्वतंत्रता खो देते हैं, लेकिन हमें सुरक्षा मिलती है और अब हमें डर में नहीं रहना पड़ता।

क्योंकि यह संप्रभु ऐसे कानून बनाता है जिनका उल्लंघन करने पर आपको दंड दिया जा सकता है, खास तौर पर गंभीर उल्लंघनों के साथ, और आप जानते हैं कि अगर आप हत्या या बलात्कार करते हैं तो आपको जेल जाना पड़ सकता है या मृत्युदंड दिया जा सकता है, तो वह डर जो मूल रूप से प्रकृति की स्थिति में अधिकांश जीवन की विशेषता थी, अब केवल उन लोगों पर लागू

होता है जो इन कानूनों का उल्लंघन करते हैं। अगर आप सिर्फ कानूनों का पालन करते हैं तो आपको किसी चीज से डरने की जरूरत नहीं है। इसलिए, संप्रभु ये कानून बनाएगा, और इसके परिणाम होंगे, उनमें से कुछ घातक हैं यदि आप सबसे महत्वपूर्ण कानूनों का उल्लंघन करते हैं, ताकि एक स्थिर, सामंजस्यपूर्ण समाज बनाया जा सके और साथ ही उस डर को दूर किया जा सके जो अन्यथा हमें सच्ची खुशी का अनुभव करने से रोकता है।

यह हस्तांतरण और विनिमय जिस तरह से किया जाता है वह सामाजिक अनुबंध या वाचा के माध्यम से होता है। और हमारे समाज में, फिर से, हमारे पास एक ऐसा अनुबंध है, जिसे हमारा संविधान कहा जाता है, लेकिन हमारे पास सभी प्रकार के अन्य कानून हैं। और हमने सुरक्षा के लिए एक निश्चित स्वतंत्रता का व्यापार किया है, है न? अगर मेरी कार इतनी तेज़ चल सकती है तो मैं सड़क पर 150 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से गाड़ी नहीं चला सकता।

मैं शायद 100 या 120 की स्पीड से गाड़ी चला सकता हूँ, लेकिन मुझे मना किया गया है। मैंने ऐसा करने की अपनी आज्ञादी छोड़ दी है, आप जानते हैं, यह जानते हुए कि इसके परिणाम ऐसे होंगे कि मुझे गिरफ़्तार कर लिया जाएगा या मुझ पर भारी जुर्माना लगाया जाएगा, शायद मेरा लाइसेंस छीन लिया जाएगा, और फिर मेरी आज्ञादी और भी ज़्यादा सीमित हो जाएगी। इसलिए, मैं कहता हूँ, ठीक है, मैं एक निश्चित सीमा से आगे गाड़ी नहीं चलाने के लिए सहमत हूँ, आप जानते हैं, जो सड़क से सड़क पर अलग-अलग होती है।

इस सुरक्षा के बदले में, मेरे पास यह है क्योंकि मैं अन्य लोगों पर भी भरोसा कर सकता हूँ कि वे भी गति सीमा का पालन करेंगे, है न? और इससे मेरी सुरक्षा होती है। तो, यह एक सौदा है जो हम करते हैं। यह एक तरह का अनुबंध है जो हम उन लोगों के साथ करते हैं जो हम पर और समाज में हमारे साथियों पर शासन करते हैं।

लेकिन हॉब्स के प्रस्ताव में, एक संप्रभु है जो सब कुछ नियंत्रित करता है, और उसके समय में ताज यह देखकर बहुत प्रसन्न था कि वह उनके राजनीतिक अधिकार को मजबूत कर रहा था। इसलिए, यह कुछ ऐसा है जो कई विद्वानों के लिए हॉब्स के वास्तविक उद्देश्यों पर थोड़ा संदेह पैदा करता है। हालाँकि, ऐसे अन्य सामाजिक अनुबंध सिद्धांतकार भी थे जो राजाओं और रानियों के दैवीय अधिकार के संदर्भ में केवल यथास्थिति का बचाव करने में इतने इच्छुक नहीं थे।

उनमें से एक जॉन लॉक थे, जो थोड़े बाद में जीवित रहे, और वे भी एक ब्रिटिश विचारक थे। 1690 में, उन्होंने नागरिक सरकार पर अपने दो ग्रंथ प्रकाशित किए, और नागरिक सरकार पर उनका दूसरा ग्रंथ अब तक लिखे गए सबसे प्रभावशाली राजनीतिक दस्तावेजों में से एक था। हमारी स्वतंत्रता की घोषणा, अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा, अनिवार्य रूप से लॉक के राजनीतिक सिद्धांत को सारांशित करती है और लागू करती है।

लॉक के विचारों को जानने का एक अच्छा तरीका है हमारी स्वतंत्रता की घोषणा को पढ़ना। हमारे संस्थापक पिता उस समय सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के संदर्भ में जो चल रहा था, उसे समझने के मामले में बहुत चतुर थे और प्राचीन ग्रीक और रोमन विचारों को भी देखते थे। और इस नई दुनिया के साथ जिसे उन्होंने खोजा था, जिसमें वे रह रहे थे, जिसे यूरोपीय लोगों ने एक या

दो सदी पहले खोजा था, उन्होंने सोचा, अरे, अब यह हमारा मौका है क्योंकि हमने बर्बर लोगों को, जैसा कि वे उन्हें कहते थे, बाहर निकाल दिया है, और अब हमें नए सिरे से शुरुआत करनी चाहिए।

हमारे पास मूल रूप से प्रकृति की एक स्थिति है। बेशक, मूल अमेरिकी लोगों ने कुछ अलग तरीके से कहा होगा। लेकिन जो भी हो, उस अन्याय के बावजूद, उस समय यूरोप से आए अमेरिकियों ने फैसला किया कि हम एक नया राष्ट्र शुरू करने जा रहे हैं।

इस नई व्यवस्था को बनाने के लिए हमें किसकी ओर देखना चाहिए? उन्होंने सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के साथ जाने का फैसला किया, जो मूल रूप से लॉक का संस्करण था। हॉब्स की तरह लॉक ने भी प्रकृति की स्थिति की इस धारणा के साथ शुरुआत की, साथ ही युद्ध की स्थिति और प्राकृतिक अधिकारों और कानूनों के विचार से भी। उन्होंने सोचा कि हॉब्स मूल रूप से यहाँ सही रास्ते पर थे।

लॉक ने प्राकृतिक अधिकारों को जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति के रूप में पहचाना है। हमारी स्वतंत्रता की घोषणा में, जेफरसन ने इसे थोड़ा सा बदल दिया, संपत्ति को खुशी की खोज में बदल दिया, जिससे यह थोड़ा और व्यापक हो गया। हालांकि, लॉक इन प्राकृतिक अधिकारों के साथ-साथ प्रकृति के एक बुनियादी कानून, दूसरे लोगों को नुकसान न पहुँचाने के कर्तव्य में भी विश्वास करते थे।

लेकिन हमें फिर से हॉब्स के अंतर्ज्ञान को साझा करने की आवश्यकता है, उस स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए किसी तरह का अनुबंध, मानव स्वभाव पर अंकुश लगाने के लिए, संपत्ति के अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए। तो, यह सब, थॉमस हॉब्स की तरह ही है, लेकिन लॉक जहाँ अलग हो जाता है, वह है हॉब्स की पूर्ण राजनीतिक संप्रभुता की धारणा को अस्वीकार करना। वह नहीं मानता कि यह उचित है, पूर्ण संप्रभुता।

वह शासितों की सहमति के इस विचार की वकालत करते हैं। और शुक्र है, मैं कहूँगा कि शुक्र है, संस्थापक पिताओं ने सोचा कि यह सबसे अच्छा तरीका था। और चलो लॉक के शासितों की सहमति के विचार के साथ चलते हैं, जहाँ लोग नियुक्त प्रतिनिधियों या राजनीतिक प्रतिनिधियों के माध्यम से खुद पर शासन करते हैं।

इसलिए, हम लोगों को इन सभी अलग-अलग स्तरों पर हमारी सेवा करने के लिए चुनते हैं, स्थानीय, राज्य और संघीय स्तर, कानून बनाने वालों के रूप में इन विभिन्न क्षमताओं में सेवा करने के लिए, जो कानून को लागू करते हैं, कार्यकारी कार्य करते हैं, और न्यायाधीश के रूप में जो कानून पर निर्णय लेते हैं, यहां तक कि एक तरह की त्रिपक्षीय सरकार प्रणाली भी है जिसमें शक्तियों का संतुलन है जिसकी कल्पना लॉक ने की थी, जैसा कि मोंटेस्क्यू जैसे अन्य सामाजिक अनुबंध सिद्धांतकारों ने किया था। लेकिन शासितों की सहमति का विचार इस समय काफी नया है, कि आप लोगों को, जैसा कि यह था, अप्रत्यक्ष रूप से संप्रभु बना रहे हैं। इसलिए, आप मुझ पर शासन करते हैं, सिविल मजिस्ट्रेट, विधायक, निष्पादक, राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, और आप मुझ पर केवल इसलिए शासन करते हैं क्योंकि मैंने और मेरे साथियों ने यह निर्धारित किया है।

हमने आपको सत्ता में बिठाया है। हम आपको वोट देकर सत्ता में लाएंगे और हम आपको वोट देकर सत्ता से बाहर भी कर सकते हैं। इसलिए, यह एक तरह से शासितों की सहमति से शासन है।

और भले ही यह मूल संस्थापक पिता ही हैं जिन्होंने हमारे लिए इस सामाजिक अनुबंध का मसौदा तैयार किया था, और तब से कई पीढ़ियाँ गुज़र चुकी हैं, हम सभी इससे बंधे हुए हैं। लॉक ने इस शब्द या वाक्यांश, मौन सहमति का इस्तेमाल यहाँ लागू करने के लिए किया, जहाँ भले ही किसी व्यक्ति ने इस सामाजिक अनुबंध पर हस्ताक्षर न किए हों, और आज जीवित किसी भी व्यक्ति ने अमेरिकी संविधान पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं, केवल कुछ दर्जन लोगों ने मूल रूप से इस पर हस्ताक्षर किए थे, लेकिन इसका मतलब सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करना था। आज तक, यह सभी अमेरिकियों का प्रतिनिधित्व करता है।

लॉक मौन सहमति से कहते हैं कि तथ्य यह है कि मैं इस देश में रहा हूँ, और मुझे इसके सभी कानूनों और सरकार द्वारा हमें दिए गए सभी प्रावधानों से लाभ मिला है, मैंने वह सब स्वीकार कर लिया है। तथ्य यह है कि मैं इस प्रणाली के कारण फला-फूला हूँ, यह दर्शाता है कि मैंने अपनी सहमति दिखाई है। यह हमारे सामाजिक अनुबंध के भीतर की शर्तों और उन सभी विशेष कानूनों का पालन करने के लिए मेरी सहमति का प्रदर्शन है जो इन शासकों ने उन लोगों की सहमति से बनाए हैं जिन पर वे शासन करते हैं।

तो, यह लॉक के सिद्धांत में एक महत्वपूर्ण तत्व है। दूसरा है विद्रोह का अधिकार या क्रांति का अधिकार। क्योंकि शासक केवल सहमति से शासन करते हैं, इसलिए एक स्थायी सहमति है कि इन कानूनों को लागू करना और लोगों की उचित तरीके से सेवा करना राज्यपालों, शासकों का कर्तव्य है।

यदि वे इससे महत्वपूर्ण रूप से अलग हो जाते हैं, यदि वे सौदे के अपने हिस्से का उल्लंघन करते हैं, और उचित रूप से शासन करने, कानून बनाने, कानूनों का न्याय करने और उन्हें लागू करने की अपनी प्रतिबद्धता का पालन नहीं करते हैं, तो उन्होंने अनिवार्य रूप से हमें शासन करने के अपने अधिकार को आत्मसमर्पण कर दिया है। इसका मतलब है कि हम एक अत्यधिक दमनकारी शासन के खिलाफ विद्रोह कर सकते हैं क्योंकि इस दमनकारी शासन ने इस तरह से हमारे अधिकारों का उल्लंघन करके और अनुबंध से हटकर जो किया है, वह यह है कि उन्होंने हमें वापस प्राकृतिक स्थिति में फेंक दिया है। और उस स्थिति में, फिर, हमें विद्रोह करने, विद्रोह करने, क्रांति शुरू करने का अधिकार है।

यह हमारे संस्थापक पिताओं और उनके तर्क पर बहुत प्रभावशाली था, बाद में 18वीं सदी में, जब उन्होंने फैसला किया कि ब्रिटिश राजतंत्र अपमानजनक था, प्रतिनिधित्व के बिना कर लगाने और लोगों के घरों में सैनिकों को रखने और संपत्ति का सम्मान न करने के माध्यम से इतना अपमानजनक था कि विद्रोह का समय आ गया था। और इस तरह, एक क्रांतिकारी युद्ध हुआ। हमारे संस्थापक पिताओं ने सोचा कि यह क्रांति के लॉकियन अधिकार का एक सरल, सीधा अनुप्रयोग है।

तो, यह लॉक के राजनीतिक सिद्धांत की एक महत्वपूर्ण विशिष्टता है जिसने हम सभी के जीवन को प्रभावित किया है। यदि आप एक अमेरिकी नागरिक हैं, तो आपको इसके लिए लॉक को धन्यवाद देना चाहिए या कोसना चाहिए। अब, यह एक खुला प्रश्न है, और हम इस बारे में तब बात करेंगे जब हम युद्ध के बारे में बात करेंगे, कि क्या एक क्रांतिकारी युद्ध कभी न्यायसंगत होता है।

आप जानते हैं, न्यायपूर्ण युद्ध के लिए क्या मानक हैं? जो लोग न्यायपूर्ण युद्ध में विश्वास करते हैं, उनके लिए शांतिवादी भी हैं जो ऐसा नहीं करते। लेकिन अगर आप मानते हैं कि युद्ध कभी-कभी न्यायपूर्ण होते हैं, तो क्रांतिकारी युद्ध कब उचित है? ऐसे कई लोग हैं जो कहेंगे कि कभी नहीं, और फिर उन्हें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि अमेरिकी क्रांतिकारी युद्ध एक अन्यायपूर्ण युद्ध था। और हम इस बारे में बात करेंगे।

तीसरे और अंतिम सामाजिक अनुबंध सिद्धांतकार, जॉन रॉल्स नामक एक हालिया विद्वान, जिन्होंने कई वर्षों तक हार्वर्ड में पढ़ाया, और सामाजिक अनुबंध सिद्धांत पर एक ऐतिहासिक कार्य लिखा, जिसे न्याय का सिद्धांत कहा जाता है। और यह कहना विवादास्पद नहीं है कि रॉल्स 20वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक अनुबंध सिद्धांतकार हैं। अब, वह उन मूलभूत नियमों या सिद्धांतों के लिए थोड़ा अलग रास्ता अपनाते हैं जिनके बारे में उनका मानना है कि हमें सामाजिक अनुबंध की स्थिति में शासित होना चाहिए।

उनका मानना है कि हमें उन सिद्धांतों को चुनना चाहिए जो सबसे न्यायसंगत हों। सवाल यह है कि हम वहां कैसे पहुंचें? और यहीं पर वह न्याय के बुनियादी सिद्धांतों तक पहुंचने के लिए एक नए विचार प्रयोग का प्रस्ताव रखते हैं। वह हॉब्स और लॉक की तरह प्रकृति की स्थिति की धारणा का समर्थन नहीं करते।

वैसे भी यह एक उपयोगी कल्पना है। यह कोई वास्तविक चीज़ नहीं है। यह एक तरह का विचार प्रयोग है।

कोई नहीं जानता कि प्रकृति की मूल स्थिति क्या थी। यहां तक कि हॉब्स और लॉक को भी यह स्वीकार करना होगा कि यह सिर्फ एक तरह का विचार प्रयोग है। जॉन रॉल्स का तर्क है कि, या उनका प्रस्ताव है कि, एक और विचार प्रयोग अधिक उपयोगी होगा।

और इसे ही वह अज्ञानता का आवरण कहते हैं। सवाल यह है कि आप समाज में आधारभूत मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में किन सिद्धांतों का चयन करेंगे? यदि आप ऐसी स्थिति में हों जहाँ आप अनजान हों, मान लें कि अस्थायी रूप से अनजान हों, अपने जीवन के विवरणों के बारे में एक तरह की अस्थायी भूलने की बीमारी हो, आप किस जाति के हैं, आप किस लिंग के हैं, आपकी उम्र क्या है, आप सक्षम हैं या विकलांग, आपका आईक्यू क्या है, आपकी विशेष प्रतिभाएँ क्या हैं। मान लीजिए कि आप अपने बारे में ये सारी बातें भूल गए हैं।

आप अपने समाज का मार्गदर्शन करने वाले कौन से सिद्धांत चुनेंगे? एक बार जब आपको याद आ जाए या आपकी अपनी खास विशेषताओं की याददाश्त वापस आ जाए, तो आप विकलांग हो सकते हैं, आप अल्पसंख्यक हो सकते हैं, या आप गоре हो सकते हैं, आप प्रतिभाशाली हो सकते हैं या किसी खास तरीके से नहीं। आप कौन से सिद्धांत चुनेंगे? रॉल्स के अनुसार, हमें इसी तरह से

आगे बढ़ना चाहिए। उनका मानना है कि अज्ञानता के इस आवरण पर विचार प्रयोग हमें न्याय के सबसे विश्वसनीय और उपयोगी सिद्धांतों तक ले जाएगा।

वह दो अलग-अलग सिद्धांतों पर सहमत होते हैं, जिन्हें वह अपने सिद्धांत के मूल तत्वों को विकसित करते समय विभिन्न संस्थानों पर बहुत अच्छी तरह से लागू करते हैं। उनमें से एक है समान स्वतंत्रता का सिद्धांत। समान स्वतंत्रता के सिद्धांत के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति को सबसे व्यापक बुनियादी स्वतंत्रता का समान अधिकार होना चाहिए जो दूसरों के लिए समान स्वतंत्रता के साथ संगत हो।

तो, आइए हम स्वतंत्रता को यथासंभव अधिकतम करें, इस हद तक कि यह हर किसी की स्वतंत्रता के साथ संगत हो। यह इस विचार का एक प्रकार का अनुप्रयोग या अभिव्यक्ति है कि मेरी अपनी बांह घुमाने का अधिकार मेरी नाक के सिरे पर समाप्त हो जाता है। आम तौर पर, हमें व्यक्तियों के लिए स्वतंत्रता को इस हद तक अधिकतम करना चाहिए कि यह अन्य व्यक्तियों की स्वतंत्रता के साथ संगत हो।

फिर इस सिद्धांत को कुछ ऐसी चीज द्वारा संतुलित किया जाता है या उसके साथ दिया जाता है जिसे वह अंतर सिद्धांत कहते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, जो यह मानता है कि हमेशा असमानताएँ रहेंगी। एक ऐसे समाज में जहाँ बहुत सारे लोग हों, कुछ हद तक असमानता हमेशा अपरिहार्य होती है।

तो, किस हद तक इन्हें अनुमति दी जानी चाहिए? अंतर सिद्धांत के अनुसार, सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को इस तरह से व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि वे एक हों, उचित रूप से सभी के लाभ के लिए अपेक्षित हों, और दूसरी बात, उन पदों और कार्यालयों से जुड़ी हों जो सभी के लिए खुले हों। अब, यह सिद्धांत विद्वानों के ध्यान, चर्चा और बहस के मामले में समान स्वतंत्रता के सिद्धांत से कहीं अधिक विवादास्पद है। लेकिन मूल विचार यह है कि जिस हद तक असमानताओं की अनुमति है, जैसे कि सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ, उन्हें ऐसा होना चाहिए कि हर कोई उनसे मदद या लाभान्वित हो सके।

खैर, इसका क्या मतलब है? जो व्यक्ति सामाजिक आर्थिक रूप से निचले स्तर पर है, वह उच्च पद पर बैठे व्यक्ति से कैसे लाभ उठा सकता है? खैर, अगर उच्च पद पर बैठा व्यक्ति सामाजिक रूप से मूल्यवान काम कर रहा है, तो इससे दूसरे पायदान पर बैठे लोगों को लाभ होता है। तो एक चिकित्सक, मान लीजिए, एक न्यूरोसर्जन, जैसे कि बेन कार्सन, यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जो बहुत अमीर है। वह कैसे अमीर हुआ? वह सामाजिक आर्थिक सीढ़ी पर बहुत ऊपर है।

ओह, मस्तिष्क की सर्जरी करना और लोगों की जान बचाना, कुछ करना, एक प्रक्रिया को अंजाम देना, और ऐसे कौशल का इस्तेमाल करना जो हममें से बाकी लोगों के पास नहीं है। और वह वर्षों और वर्षों के गहन प्रशिक्षण के माध्यम से ऐसा करने में सक्षम था। वह ऐसा करने के लिए तैयार था।

उनके पास संज्ञानात्मक क्षमता के साथ-साथ ऐसा करने के लिए स्थिर हाथ और धैर्य भी था। और इसलिए, मैं निश्चित रूप से ऐसे समाज में होने से खुश हूँ जहाँ लोगों को बहुत लाभ होता है और

यहां तक कि न्यूरोसर्जन के रूप में करोड़पति भी बनते हैं और चिकित्सा में सभी प्रकार के अन्य उत्कृष्ट कार्य करते हैं क्योंकि इससे मुझे लाभ होता है। और इसलिए, यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि आप कौन हैं, आप कह सकते हैं, हाँ, एथलीट और मनोरंजनकर्ता, उन्हें भी लाखों का भुगतान किया जा सकता है क्योंकि मैं वास्तव में संगीत और फिल्म की सराहना करता हूँ और उच्च स्तर पर खेले जाने वाले फुटबॉल खेल देखना पसंद करता हूँ।

लेकिन ये ऐसी चीजें हैं जिन पर रॉल्लियन सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के संदर्भ में हम बहस कर सकते हैं। लोगों के पास किस तरह की सेवाएं या कौशल हैं जिसके लिए वे बहुत सारा पैसा कमाते हैं? क्या उनके लिए इतना अधिक पैसा कमाना उचित है? क्या एनबीए खिलाड़ी या किसी अन्य पेशेवर एथलीट के लिए रबर की गेंद को धातु की अंगूठी में डालकर या राख की लकड़ी से गाय के चमड़े को मारकर सालाना लाखों डॉलर कमाना वास्तव में उचित है? सच में? बहुत से लोग कहेंगे, बेन कार्सन, ज़रूर। एक न्यूरोसर्जन, हाँ।

लेकिन मैं इस बात से आश्चर्य नहीं हूँ कि क्लेटन केरशॉ, जो बार-बार 95 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से गेंद फेंकता है, उसे सैकड़ों मिलियन डॉलर मिलने चाहिए। इसलिए, यहाँ बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन पर हम बहस कर सकते हैं, लेकिन यह एक बुनियादी विचार है। अंतर सिद्धांत का दूसरा भाग यह है कि ऊपरी छोर पर वे सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ, जहाँ लोग करोड़पति और अरबपति हैं, उन अवसरों को कम से कम सभी के लिए उपलब्ध होना चाहिए।

कम से कम, सिद्धांत रूप में, किसी के लिए भी वहाँ पहुंचना संभव होना चाहिए। अब, क्या यह संभव भी है? यह, फिर से, सवाल के लिए खुला है, लेकिन यह मूल विचार है। इसलिए, रॉल्ल ने इस सिद्धांत को बड़े पैमाने पर विकसित किया, और यह अनुबंध सिद्धांत का एक और संस्करण है।

यह हॉब्स और लोट के समान ही मूल विचार है: किसी प्रकार का औपचारिक समझौता होगा जो उस अनुबंध का गठन करेगा, और समाज का निर्माण उसी के अनुसार किया जाएगा। अब, यह प्रमुख सामाजिक अनुबंध सिद्धांतों का एक बहुत अच्छा नमूना है, और मुझे लगता है कि यहाँ कुछ ऐसी ताकतें हैं जिन्हें हमें स्वीकार करने की आवश्यकता है। सामाजिक अनुबंध नैतिकता हमें कुछ कठिन सवालों के कुछ सरल और प्रशंसनीय उत्तर देती है कि हमें कैसे जीना चाहिए, कम से कम एक पुलिस या एक नागरिक समाज में।

यह संशयवादियों और सापेक्षवादियों के लिए भी नैतिक नियम प्रदान करता है। यह सभी को शामिल करता है। मेरा मतलब है, अगर आप उस समाज में उस विशेष सामाजिक अनुबंध के साथ रह रहे हैं, तो ये सभी नियम आप पर लागू होते हैं, इसलिए इसमें सभी शामिल हैं, और यही इस सिद्धांत की ताकत लगती है।

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि का भी लाभ उठाता है, जिसे कैदी की दुविधा नामक किसी चीज़ में कैद किया गया है, जो गेम थ्योरी में एक पसंदीदा तरह का विचार प्रयोग है, जो दर्शाता है कि कुछ स्थितियों में, अपने स्वयं के हित में काम करने वाले लोग ऐसे विकल्प चुनेंगे जो वास्तव में इष्टतम नहीं हैं, और जो उनके स्वयं के हित के विरुद्ध काम करते हैं, और सबसे तर्कसंगत बात

वास्तव में समग्र भलाई के लिए कुछ बलिदान करने के लिए तैयार रहना है, और फिर इससे मुझे लाभ होगा, ये बलिदान करना और पूरी तरह से आत्म-अवशोषित न होना, जो मेरे और बाकी सभी के लिए सबसे अच्छा होगा। हमें अपने सर्वोत्तम हितों को प्राप्त करने के लिए अपने कुछ हितों का त्याग करने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है। यह कैदी की दुविधा में कैद एक तरह का विरोधाभास है, जिसकी पुष्टि सामाजिक अनुबंध नैतिकता में की गई है।

तो, ये सामाजिक अनुबंध सिद्धांत में महत्वपूर्ण ताकत और अंतर्दृष्टि हैं। हालांकि, यहां कुछ समस्याएं हैं। एक समस्या यह है कि सामाजिक अनुबंध सिद्धांत कुछ विचार प्रयोगों पर आधारित है जो पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं हैं।

आपके पास द स्टेट ऑफ नेचर जैसी ऐतिहासिक कथाएँ और द वील ऑफ इग्नोरेंस जैसा विचार प्रयोग है। यह कितना विश्वसनीय है? और शायद समाज को संचालित करने के लिए बुनियादी सिद्धांतों या नियमों के रूप में हम जो तय करेंगे, उसके बारे में मेरी अंतर्ज्ञान वही नहीं है जो आप चुनेंगे। और यह अधिकारों और कर्तव्यों को कृत्रिम बनाता है।

यह नैतिक नियमों तक पहुँचने का एक तरह का मनगढ़ंत तरीका है। और क्या ये वास्तव में नैतिक नियम हैं, बल्कि राजनीतिक आदेश हैं जो वास्तव में नैतिकता के आधारभूत स्तर तक नहीं पहुँचते? और वह यह आलोचना करेंगे, जो मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण भी है। तीसरा, कुछ सिद्धांतों पर सार्वभौमिक सहमति है।

यह गारंटी नहीं देता कि वे सिद्धांत स्वयं न्यायसंगत हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए रॉल्स को ही लें। वह समान स्वतंत्रता और अंतर सिद्धांत पर सहमत हैं, जिसके बारे में उनका मानना है कि अज्ञानता के पर्दे के पीछे रहने वाले लोग समाज के लिए अंतिम दिशा-निर्देश के रूप में इसे चुनेंगे।

पहला, वह इतना आश्चर्य कैसे हो सकता है कि हर कोई यही चुनेगा? क्या ऐसे कुछ लोग नहीं होंगे जो इससे असहमत होंगे? शायद यह बहुमत होगा। शायद यह सिर्फ रॉल्स और कुछ बेहतरीन विचारक ही होंगे जो उन सिद्धांतों पर सहमत होंगे। जब हम उनकी किताब पढ़ते हैं तो हम उनकी दया पर निर्भर होते हैं, है न? कि ये वे सिद्धांत हैं जिन्हें तर्कसंगत लोग अज्ञानता के पर्दे के पीछे से चुनेंगे।

लेकिन उससे भी ज़्यादा बुनियादी बात यह है कि भले ही ये वो सिद्धांत हों जिन्हें तर्कसंगत लोग चुनेंगे, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि ये सिद्धांत खुद न्यायसंगत हैं। सिर्फ इसलिए कि ये ऐसे सिद्धांत हैं जिन पर लोग सहमत होने की प्रवृत्ति रखते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि ये सिद्धांत खुद सबसे न्यायसंगत हैं। इसलिए यहाँ एक छलांग है।

यह एक तरह से गैर-अनुक्रमिक है। मुझे लगता है कि यह रॉल्स के सिद्धांत में एक घातक दोष है, यह मानते हुए कि लोगों द्वारा कुछ सिद्धांतों को चुनने की संभावना इस बात की गारंटी देती है कि सिद्धांत स्वयं न्यायसंगत हैं। इसलिए, सामाजिक अनुबंध नैतिकता ग्रामीण उपयोगितावादी दृष्टिकोण को समझने का एक तरीका है जो ऐतिहासिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

और फिर, हम सभी के जीवन पर इसका गहरा असर पड़ा है। और यह कई मायनों में बहुत ही सरल और व्यावहारिक है। और राजनीतिक दृष्टिकोण से, आप जानते हैं, यह शायद सबसे अच्छा काम है जो हम कर सकते हैं।

लेकिन अभी भी खामियाँ हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि क्या यह नैतिकता के लिए हमारे सबसे गहरे नैतिक कर्तव्यों और दायित्वों और अधिकारों को समझने के लिए पर्याप्त है? सामाजिक अनुबंध सिद्धांत में एक बहुत महत्वपूर्ण सीमा है। कई लोग तर्क देंगे, मैं तर्क दूंगा, यह सिद्धांत संविधान के साथ समाज को गढ़ने में राजनीतिक दृष्टिकोण से जितना उपयोगी है। यह हमें यह बताने के मामले में वास्तव में बहुत मददगार नहीं है कि हमारे सबसे गहरे नैतिक कर्तव्य, सार्वभौमिक नैतिक कर्तव्य और अधिकार क्या हैं।

और इसलिए, हमें किसी अन्य सिद्धांत पर आगे बढ़ना होगा जो अधिक उपयुक्त होगा। और यही हम आगे करेंगे।

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 4 है, सामाजिक अनुबंध सिद्धांत।